सत्र समापन के अवसर पर माननीय अध्यक्ष महोदय का उद्‌बोधन

(दिनांक 23 नवम्बर, 2006)

छत्तीसगढ़ राज्य की द्वितीय विधान सभा का दशम् सत्र जो शीतकालीन सत्र भी था, आज उसका अंतिम दिवस है । इस सत्र में महत्वपूर्ण संसदीय कार्यो के सम्पादन में सहयोग देने के लिए मैं सदस्यों को धन्यवाद देता हूँ ।

आप अवगत हैं कि यह सत्र 20 नवम्बर से 01 दिसम्बर, 2006 तक के लिए आहूत था जिसमें कुल 10 बैठकें प्रस्तावित थीं परंतु परिस्थितिजन्य कारणों से और सदन की सहमति से मैंने सत्र अवधि को संशोधित करते हुए इस शीतकालीन सत्र को केवल 4 दिवसों का रखने का निर्णय लिया ।

प्रथमतः माननीय नेता प्रतिपक्ष श्री महेन्द्र कर्मा जी एवं सदन के उप नेता माननीय भूपेश बघेल जी को मैं विशेष रूप से धन्यवाद देता हूँ कि उन्होंने अपनी उपस्थिति से न केवल सदन के संचालन में मुझे सहयोग दिया, अपितु लोकतांत्रिक मूल्यों को जीवित व जागृत रखने की अपनी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया ।

इस सत्र में हमारे बीच इस सदन के वरिष्ठतम सदस्य स्वर्गीय पंडित राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल, जो इस सभा के अध्यक्ष भी रहे, की कमी भी हमें खलती रही। इस सदन से उनका विछोह निश्चित तौर पर पीड़ादायक रहा । पंडित राजेन्द्र प्रसाद शुक्ल संसदीय संस्कृति के न केवल हिमायती अपितु वे इसके संवाहक एवं उत्प्रेरक भी रहे । सभा में उत्कृष्ट संसदीय परम्पराओं को स्थापित करने का हम सबका प्रयास उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगा ।

इस अवसर पर मैं यह भी कहना चाहूँगा कि किसी संसदीय सदन की गरिमा उस सदन के सदस्यों के कार्य, व्यवहार और विचार पर निहित है, मेरा माननीय सदस्यों से आग्रह है कि वे संसदीय संस्कृति को शाश्वत् रखते हुए अपनी जनसेवक की भूमिका का निर्वाह करें।

जनप्रतिनिधि जनता के सेवक होते हैं और संसदीय सदन उनकी साधना–स्थली होती है, जिसमें वह लोक–कल्याण और लोक–महत्व के मंत्रों को आत्मसात कर सेवा, समर्पण का भाव जन–जन तक संचारित करने का प्रयास करते हैं । इस सदन के सम्मान और महत्व को संवर्धित करने के लिए हम सबके समन्वित प्रयास की निरंतर आवश्यकता है । इस बात का मैं विशेष रूप से उल्लेख करना चाहता हूँ कि छत्तीसगढ़ राज्य की द्वितीय विधान सभा के अपनी संक्षिप्त संसदीय यात्रा के कदम उल्लेखनीय रहे हैं, इस हेतु मैं इस सभा के समस्त सदस्यों विशेषकर सदन के नेता एवं नेता प्रतिपक्ष को बधाई देता हूँ । यह अवश्य है कि इस सत्र में संसदीय कार्यों का सम्पादन पूर्व योजना अनुसार नहीं हो सका परंतु ऐसे अवसर भी यदा–कदा आते हैं, जब परिस्थितियों के अनुरूप हमें अपने निर्णयों पर पुनर्विचार करना पड़ता है ।

इस लघु सत्र में सदन के सम्पन्न कार्यों की संक्षिप्त जानकारी से मैं आपको अवगत कराना चाहूँगा । इस सत्र के कुल 4 कार्य दिवसों में कुल 9 घण्टे चर्चा हुई । इस सत्र में कुल 1022 प्रश्नों की सूचनाएं प्राप्त हुई, जिसमें ग्राह्य तारांकित प्रश्न 339 रहे, इनमें से 23 प्रश्नों पर चर्चा हुई। इस सत्र में अविलम्बनीय लोक महत्व के प्रत्येक विषय विभिन्न माध्यमों से सदन में उठाये गये । इस सत्र में नियम 139 के अंतर्गत चर्चा हेतु कुल 10 सूचनायें प्राप्त हुई, जिनमें से एक सूचना पर चर्चा हुई । इस सत्र में 18 अशासकीय संकल्प की सूचनाएं प्राप्त हुई ।

इस सत्र में स्थगन के प्रस्ताव की कुल 20 सूचनाएं प्राप्त हुई, जिनमें से 10 सूचनाएं ध्यानाकर्षण के रूप में परिवर्तित की गई तथा 10 अग्राह्य रही । इस सत्र में शून्यकाल की 18 सूचनायें प्राप्त हुई, जिनमें से 14 सूचनायें ग्राह्य व 4 सूचनायें अग्राह्य रही ।

द्वितीय विधान सभा के इस दशम सत्र में कुल 226 ध्यानाकर्षण की सूचनायें प्राप्त हुई, जिनमें से 35 सूचनायें ग्राह्य व 173 सूचनायें अग्राह्य रही । इस सत्र में कुल 3 विधेयक लाये गये और 3 विधेयक पारित हुये । इस सत्र में ही कुल दो प्रतिवेदन पटल पर रखे गये, वहीं 39 याचिकायें भी सदन के पटल पर रखी गई। इसके साथ ही सदन के महत्वपूर्ण कार्य, वित्तीय कार्य, अनुपूरक मॉगों का पुरःस्थापन का महत्वपूर्ण कार्य भी निष्पादित हुआ । विशेषाधिकार भंग का एक प्रस्ताव भी प्राप्त हुआ । इस सत्र के समापन अवसर पर मैं पुनश्च माननीय मुख्यमंत्री जी, माननीय नेता प्रतिपक्ष के प्रति विशेष रूप से आभार व्यक्त करता हूॅ कि उन्होंने सदन के संचालन में मुझे सहयोग दिया ।

यह अवसर है जब हम इस वर्ष में अपनी उपलब्धियों के साथ अपनी चूक पर दृष्टिपात करें और आने वाला नया वर्ष हम सबके लिए उपलब्धिपूर्ण हो ऐसा प्रयास करें । मैं इस अवसर पर आप सबको आने वाले नये वर्ष की बधाई देता हूॅ ।

आप सबको यह विदित ही होगा कि दिनांक 14 दिसम्बर, 2006 को इस विधान सभा की स्थापना को 6 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं । नव गठित राज्य की प्रथम विधान सभा की प्रथम बैठक दिनांक 14 दिसम्बर, 2000 को हुई थी । इस यादगार अवसर पर भी आप सबको बधाई।

अंत में आप सभी माननीय सदस्यों का मुझे जो सहयोग मिला, उसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ ।

यह वर्ष 2006 का अंतिम सत्र है, अब हम फिर वर्ष 2007 में बजट सत्र में मिलेंगे । आगामी बजट सत्र फरवरी माह के तीसरे–चौथे सप्ताह से आरंभ होकर अप्रैल माह के प्रथम सप्ताह की अवधि में होना सम्भावित है ।

इस अवसर पर मैं पत्रकार साथियों, इलेक्ट्रानिक मीडिया के प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहूँगा कि उन्होंने सदन की कार्यवाही को जन–जन तक पहुँचाया । मैं दूरदर्शन के प्रति भी आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होंने विधान सभा की कार्यवाही के प्रश्नकाल का प्रसारण कर इस सदन की दीर्घाओं के विस्तार में अपनी भूमिका निबाही ।

सत्र के सफलतापूर्वक समापन के अवसर पर राज्य शासन के समस्त अधिकारियों/कर्मचारियों को भी बधाई देता हूँ कि उन्होंने प्रदत्त दायित्वों का गंभीरता से परिपालन किया । इस अवसर पर मैं सुरक्षा व्यवस्था में संलग्न अधिकारियों एवं कर्मचारियों को भी बधाई देता हूँ जिन्होंने सुदृढ़ सुरक्षा व्यवस्था को पूरे सत्रकाल में कायम रखा ।

अन्त में मैं विधान सभा के सचिव सहित समस्त अधिकारियों/ कर्मचारियों की भी प्रशंसा करना चाहूँगा जिन्होंने न केवल सभा की कार्यवाही के संचालन में मुझे सहयोग दिया वरन् इस सचिवालय की गरिमा एवं प्रतिष्ठा में भी अपने कार्यों से अभिवृद्धि की ।

जय हिन्द, जय भारत, जय छत्तीसगढ़